आधुनिकता की अवधारणा

डॉ मधुछन्दा चक्रवर्ती

आधुनिकता के बारे में कई मत प्रचलित है। विश्वकोश में कहा गया है कि अनुपयोगी-विश्वासों,घिसी-पिटी निरर्थक रीतियों और मनुष्य अथवा समाज के स्वाभाविक विकास में बाधक प्रचलित मान्यताओं से मुक्ति दिलाने वाली वैचारिक अवधारणा का नाम आधुनिकता है।[1] वही रामधारी सिंह दिनकर कहते हैं कि आधुनिकता का लक्षण यह है कि सत्य की खोज में वह एकमात्र प्रमाण बुद्धि का मानती है और अन्धविश्वास अथवा क्च्चे विश्वास के साथ वह कभी भी समझौता नहीं करती। श्रद्धा का प्रभुत्व और उसका हस्तक्षेप, आधुनिकता में दोनों अग्राह्य है।[2] मानव समाज कई वर्षों से विभिन्न प्रकार की मान्यताओं, परम्पराओं, विश्वासों आदि को लेकर चलता आया है। कुछ परम्पराएँ एवं मान्यताएँ जीवन शैली से जुड़ी है तो कुछ लोगों की मानसिकता से। ऐसे में किसी एक के प्रति रूढ़ होकर उसका अंधानुसरण करना या विश्वास करना ही अंधविश्वास कहलाता है और यह अंधविश्वास हमारे यहाँ में कई रूपों में मौजूद है। जैसे चन्द्र ग्रहण या सूर्य ग्रहण के समय मानसिक रोगियों पर होने वाले तरह-तरह के उपचार या बाबाओं या साधुओं द्वारा बताए गए टोने-टोटके से अपने जीवन की समस्याओं का निवारण करना आदि। परन्तु इन विश्वासों से मानव जाति का भला न होकर नुकसान ही हुआ है। आज भी कई लोग ऐसे अंध-विश्वास का सहारा लेकर

अपना सबकुछ गवां बैठते है। बीते दिनों में ऐसे कई मामले हमारे सामने आए हैं जिनमें फर्ज़ी बाबाओं ने लोगों का सबकुछ यहाँ तक कि उनकी माँ, बेटी, बहन तक की आबरू को भी लूट लिया हो। फिर ऐसी अंधी-आस्था किस काम की? कई प्रचलित मान्यताओं ने तो समाज एवं मनुष्य के जीवन को पूरी तरह से खोखला बना डाला है। कर्म का क्षेत्र हो या धर्म, ऐसी मान्यताएँ सर्वत्र परिलक्षित होती रहती हैं। ऐसे में जब मनुष्य अपनी मुक्ति के लिए ठान लेता है तो वह इन सब रूढ़ियों को तोड़कर आगे आने की कोशिश करता है। यह तब होता है जब उसे आत्मबोध होता है। तब उसके मन में कई प्रश्न उठने लगते है। वह वर्तमान की जिस परिस्थिति में जी रहा है क्या वाकई वह उस परिस्थिति में जी सकेगा? क्या वह परिस्थिति उसके अनुकूल है? जब-जब मानव समाज में किसी व्यक्ति या व्यक्ति समूह को अपनी ही बनायी गयी रूढ़ियों, मान्यताओं, प्रचलित विश्वासों आदि पर संदेह हुआ है या उसे उसने अपने प्रतिकूल पाया है तब-तब समाज में क्रान्ति की लहर दौड़ी है और उसने इन सबसे मुक्ति पाने के लिए अपनी आवाज़ बुलन्द की है। उसने तब-तब अपने विचारधारा, चिन्तन शक्ति का प्रयोग अपनी वर्तमान परिस्थिति को सुधारने के लिए किया है।। इसी को ही आधुनिकता बोध कहते है। वही दिनकर की बात पर यदि गौर करे तो पता चलता है कि जब व्यक्ति के मन में प्रश्न उठता है तो वह न केवल अपनी ही परिस्थिति की तरफ देखता है बल्कि अपने आस-पास के जीवन के तरफ भी देखता है। ऐसे में वह अपने और अपने आस-पास के जीवन में सत्य की खोज करना शुरू कर देता है। फिर चाहे वह किसी भी बात से सम्बन्धित क्यों न

ONLINE ISSN 2278-5264
Volume-I, Issue-II, October-2012
© Department of Bengali
Karimganj College, Karimganj, Assam, India

हो। उसमें वह अपनी बुद्धि का प्रयोग करता है। तब यदि उसके रास्ते में कोई भी रुकावट आए वह उनसे लड़ता है। जैसे मानवीय सम्बन्ध, सामाजिक व्यवस्था एवं वर्तमान परिस्थिति, धार्मिक रूढ़ियां या मान्यताएँ आदि का वह खण्डन करता है। उसके लिए तब यह करना जरूरी हो जाता है। क्योंकि वह इस टेबू को नहीं मानना चाहता कि क्यों, कैसे जैसे शब्दादि का कोई अर्थ नहीं है। वह इस भ्रम में नहीं जीना चाहता कि ईश्वर ने या किसी व्यक्ति विशेष द्वारा बनायी गयी इस समाज की यही व्यवस्था है, यही कानून है, यही रीति है जिसे मानकर उसे जीते रहना पड़ेगा। वह इन सब बातों को खारिज करता है। इसी के चलते वह नित नए सत्य की खोज करता हुआ जीता जाता है और कभी-कभी ऐसा भी होने लगता है जब वह इन स्थापित सत्यों को खण्डित कर उन्हें नयी दिशा भी प्रदान करता है। विज्ञान में इसके कई उदाहरण हमें देखने को मिलेंगे।

आधुनिकता का मतलब हम केवल पुरानी रूढ़ियों एवं अंध-विश्वासों से मुक्ति की कोशिश को नहीं कह सकते। आधुनिकता में जब पुरानी रूढ़ियों, अंध-विश्वासों या मान्यताओं से मुक्ति मिलती है तो बदले में हमें उसके स्थान पर वर्तमान समय के अनुकूल, मांग के अनुकूल मानव के विकासोन्मुखी मान्यताओं की स्थापना करनी पड़ती है। ऐसा इसलिए क्योंकि बिना किसी आधार या विचारधारा के समाज नहीं चल सकता है। ऐसे में उसे अपनी नयी मान्यताओं को स्थापित करने के लिए विरोध का सामना भी करना पड़ सकता है। 'आधुनिकता और हिन्दी कहानी' नामक अपने निबन्ध में इन्द्रनाथ मदान ने इस पर एक बहुत अच्छी बात कही है कि, 'आधुनिकता एक मूल्य

ONLINE ISSN 2278-5264
Volume-I, Issue-II, October-2012
© Department of Bengali
Karimganj College, Karimganj, Assam, India

न होकर एक प्रक्रिया है जिसके मूल में वैज्ञानिक जीवन-दृष्टि है जो समसामयिक जीवन को उसकी गति के रूप में ग्रहण करती है, प्रश्न-चिह्न को उसकी निरंतरता के रूप में आत्मसात् करती है। इसलिए इसमें विसंगतियों की संभावना है, परस्पर विरोध की स्थिति है'।[3] तो वही सुधीश पचौरी यह कहते हैं कि आधुनिकता ज्ञानोदय है, रूपांतरणकारी आदर्शवाद है, वीरता है, उत्साह है, सृजन है।[4] दोनों के मतों में एकरूपता है। जब-जब हमने पुरानी रूढ़ियों या मान्यताओं के विरुद्ध आवाज़ उठाने की कोशिश की है तो हमें उसके विरोध का सामना करना पड़ा है। इसको यदि वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो जैसे प्रकृति में जहाँ-जहाँ जो-जो वनस्पति या जीव-जन्तू अपने स्थान के अनुकूल रच-बस चुके है तथा उन्हें उन्हीं स्थानों के वातावरण की आदत लग चुकी है। यदि उनमें से किसी को भी अपने स्थान से हटा दिया जाए तो उसे नुकसान ही पहुँचता है या फिर नए सिरे से उसे नए स्थान पर रहने की शुरूआत करनी पड़ती है। परन्तु ऐसा जब भी हुआ है जीव-जन्तुओं ने भी अपने-आप को नए वातावरण के हिसाब से ढाल लेना सीख लिया है। मानव समाज की भी यही स्थिति है। वर्षों से हम अपनी बनायी रीति-रिवाज़ों तथा मान्यताओं के साथ जीते आ रहे है। हमें इनकी आदत हो चुकी है। लेकिन यह भी सच है कि इन्हें केवल हम जी रहे है, विकास एक तरफ से रूक सा गया है तथा इन रीति-रिवाज़ों की आड़ में कितनी ही जीवनों की बलियाँ चढ़ जाती है। ऐसे में क्या ठीक होगा कि इन रीति-रिवाज़ों या रूढ़ियों को बनाए रखा जाए? यही कारण है कि जब इनके विरुद्ध आवाज़ उठती है तो समाज में द्वन्द्व की स्थिति पैदा होती है। दहेज प्रथा,

ONLINE ISSN 2278-5264
Volume-I, Issue-II, October-2012
© Department of Bengali
Karimganj College, Karimganj, Assam, India

सती प्रथा, बाल-विवाह, बहु-पत्नी विवाह, बलि प्रथा जैसी कुछ प्रथाओं ने मानव समाज को सिवाय दुख के कुछ नहीं दिया। विडम्बना है कि ये आज भी ये मौजूद है। यद्यपि इनके विरोध में आवाज़ उठायी जाती रही है। कई कड़े कानून भी बनाए गए है। लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि हम केवल सैद्धांतिक तौर पर तो इससे मुक्ति की कोशिश करते नज़र आते है पर वास्तविकता कुछ और ही दिखायी देती है। इसी प्रकार स्त्री शिक्षा, स्त्रियों के घर से बाहर जाकर धनोपार्जन करने, उनके राजनीति या समाज के अन्य क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभाने को लेकर भी कई विरोध झेलने पड़े है। लेकिन आज की स्त्रियों को अपने अस्तित्व का बोध हो गया है तथा वे समझ चुकी है कि भले ही वैदिक काल से लेकर अब तक जो भी स्थिति रही हो लेकिन अब उसी तरह की स्थिति में जीते रहना समझदारी नहीं है बल्कि हमें भी अपना जीवन जीना है। अपने अस्तित्व तथा अस्मिता को बचाए रखकर उसे बनाते हुए जीना है। इसलिए आज की स्त्रियाँ इस अर्थ में आधुनिक है क्योंकि उन्हें अपने अस्तित्व का बोध हो गया है, वे अपने ऊपर लगायी जा रही बिना मतलब की बाधाओं पर प्रश्न उठा रही हैं, तर्क कर रही हैं, विरोध कर रही हैं तथा अपने विकास के लिए साहसपूर्वक आगे बढ़ रही हैं। समकालीन स्त्री विमर्श इसी का परिणाम है।

इसी तरह दलितों ने भी अब अपनी अस्मीता के लिए लड़ना शुरू कर दिया है। वे हमेशा से ही एक बड़े उत्पादक वर्ग के रूप में अपनी भूमिका निभाते रहे है और बदले में समाज के तथाकथित उच्च वर्ग ने उन्हें अपने बराबर न समझकर हमेशा से पद-दलित

ONLINE ISSN 2278-5264
Volume-I, Issue-II, October-2012
© Department of Bengali
Karimganj College, Karimganj, Assam, India

बनाए रखा। एक समय दलितों ने भी बरसों की गुलामी को यथास्थिति मान लिया था। यही कारण है कि उनकी स्थिति वर्षों तक समाज में निम्नतम स्तर पर रही और वे दीन-हीन बनकर रहे। इससे सदैव असंतुलन की स्थिति बनी रही है और इसके कई घातक परिणाम सामने आए। हम अपने ही इतिहास को देखें, तो समझ पाएंगे कि यदि स्वाधीनता की लड़ाई के लिए आन्दोलनकारियों ने इन्हें अपने साथ न मिलाया होता तो आज भी हम गुलाम ही रहते। अब दलितों ने भी अपनी स्थिति को सुधारने की कोशिश की तो समाज में आधुनिकता ने नया मोड़ लिया और तेज़ी से उसका विकास हुआ। इसलिए समय आ गया है कि हम अपनी सोच को बदलें और पुरानी सामंतवादी मानसिकता से स्वयं को दूर करे। हाँ यह भी आवश्यक है कि हम अपने मानव मूल्यों को न छोड़े।

स्त्री तथा दलितों से जुड़े उपर्युक्त दोनों विषयों ने जब से हमारे विचार क्षेत्र में पदार्पण किया है तब से लेकर इन दोनों वर्गों की कई सारी समस्याओं का निवारण होता रहा है तथा वास्तव में आज मानव समाज उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा है। ये दोनों विषय आज राजनीति, कानून तथा साहित्य के महत्त्वपूर्ण अंग बन चुके है।

आधुनिकता सदैव ही हर सम्बन्ध, हर परिस्थिति, हर व्यवस्था पर सवाल उठाती रही है। इसीलिए समाज में उसी के कारण गतिशीलता बनी रही है क्योंकि आधुनिकता एक बोध है, विचार है। आधुनिकता का मतलब विकास करना है, न कि पुरानी चीज़ों की केवल तोड़-पोड़ या उन्हें पूरी तरह से खत्म कर देना। लेकिन कई बार आधुनिकता को

लेकर लोग उसके पीछे इतने अंधे हो जाते है कि तब वह आधुनिकता का वास्तविक अर्थ समझे बिना किसी भी नयी बात का अंधानुकरण करने लगते है। ऐसे में आधुनिकता के नाम पर विध्वंस होने लगता है। मशीन तथा नए-नए ओद्यौगिक संसाधनों के द्वारा मानव समाज के विकास की बात की जाती रही है लेकिन उससे पर्यावरण का कितना नुकसान होता आ रहा है या हो रहा है इस पर कोई ध्यान नहीं देता है। पर आज फिर से कुछ बुद्धिजीवियों ने इस बात पर ध्यान दिया है तथा अपने तरफ से सम्भव कदम उठा रहे है जिनसे आधुनिकता के नाम पर होने वाले इस विनाश लीला को रोका जा सके।

आधुनिकता को प्रायः ही पश्चिमीकरण से जोड़कर देखा जाता रहा है। इतिहासकारों ने भारत में आधुनिक काल का समय भी तब से माना जब से भारत में पश्चिम से आए लोगों ने अपना अधिपत्य जमाते हुए भारत के पुराने ढाँचे को बदलना शुरू कर दिया एवं परम्परागत मान्यताओं के स्थान पर अपनी नयी मान्यताओं को लादना करना शुरू कर दिया। तब से हमारी जीवन-शैली, सोच-विचार, सामाजिक व्यवहार यहाँ तक कि बोल-चाल में पश्चिम के अनुकरण को आधुनिकता के रूप में देखा जाने लगा। आज हम जितना पश्चिम की जीवन-शैली को अपनाते है और उसी के अनुरूप अपने-आपको ढालते है तो समाज में हमें न केवल आधुनिक कहा जाता है बल्कि एक विशिष्ट व्यक्ति के रूप में भी देखा जाता है जो एक औपनिवेशिक समझ है। परन्तु हम यह भूल जाते हैं कि भले ही आज के तेज़ गति वाले समय में पश्चिम से आए मशीनीकरण ने हमें सुविधा प्रदान की है और हम आज के युग से ताल से ताल मिलाकर

ONLINE ISSN 2278-5264
Volume-I, Issue-II, October-2012
© Department of Bengali
Karimganj College, Karimganj, Assam, India

चल सक रहे है वही हमारी अपनी भारतीय जीवन-शैली भी आधुनिकता के बिंदु के पुट रहे हैं। वस्तुतः आधुनिकता के बारे में सोचे तो यह किसी देश या प्रान्त विशेष की बपौती नहीं है बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए है। सभी देशों की अपनी-अपनी परम्पराएँ एवं कुछ रूढ़ियाँ रही होंगी। परन्तु देखने की बात यह है कि पश्चिम में इस बात की शुरूआत पहले हुई। उन्होंने पहले अपनी उन रूढ़ियों से अपने समाज को मुक्त करना शुरू किया जो उनके स्वाभाविक विकास में बाधक रही है। तभी उनका विकास हमसे पहले हुआ और आज भी वे अपने-आपको रूढ़ियों से दूर रखकर ही सोचते है इसीलिए हमसे वे अधिक विकसित और आगे है। ऐसा नहीं है कि विदेशों में जब आधुनिक विचारधारा की शुरूआत हुई तो वहाँ उसे विरोध का सामना करना नहीं पड़ा बल्कि वहाँ भी जिन लोगों ने अपनी मौलिक एवं आधुनिक विचार धारा सामने रखी, उन्हें वहीं के लोगों के कोप का भाजन बनना पड़ा। 'आधुनिकता का उद्भव' नामक लेख में कैलाश वाजपेयी लिखते है कि रूढ़िग्रस्त वैचारिकता में फंसे, तत्कालीन यूरोप में परिवर्तन की पहली आहट तब सुनाई पड़ी जब गैलिलियो अपनी दूरबीन के साथ खगोल विद्या के क्षेत्र में इस मान्यता को, स्थापना का बाना पहनाकर कि सूर्य नहीं पृथ्वी घूमती है पोप के कोप का भाजन बना।[5] गैलिलियो ने अपने इस मत से वहाँ के बाइबिल तथा अरस्तू के मत को चुनौती दी थी इसलिए उसे मार डाला गया था। लेकिन बाद में वहीं के ही कई विद्वानों ने इस प्रकार की कई मान्यताओं को समर्थन दिया और आधुनिकता का उद्भव एवं उसके विकास में योगदान दिया।

ONLINE ISSN 2278-5264
Volume-I, Issue-II, October-2012
© Department of Bengali
Karimganj College, Karimganj, Assam, India

इस प्रकार कहा सकता है कि आधुनिकता एक ऐसी सोच या विचारधारा है जो न केवल हमें रूढ़ियों से मुक्ति दिलाती है बल्कि नयी विचारधारा या चिन्तनशक्ति को स्थापित करने की भी प्रेरणा देती है। इससे हमारा साहस और विवेक जागृत होता है और विकास की ओर जाने का मार्ग प्रशस्त होता है।

ONLINE ISSN 2278-5264
Volume-I, Issue-II, October-2012
© Department of Bengali
Karimganj College, Karimganj, Assam, India

संदर्भ :

1) मानव-मूल्य-परक शब्दावली का विश्वकोश, प्रकाशक : सरूप एण्ड सन्ज़, नई दिल्ली, ISBN -81-7625-612-9, सं: 2005, पृ.सं. – 288.
2) चिन्तन के आयाम – रामधारी सिंह दिनकर, प्रकाशन : लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद 2008, पृ.सं –113.
3) नयी कहानी: संदर्भ और प्रकृति, संपादक : डॉ देवी शंकर अवस्थी, प्रकाशन : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, ISBN -978-81-267-1521-3, सं : 2008, पृ.सं. -185. (अ.- आधुनिकता और हिन्दी कहानी- इन्द्रनाथ मदान)
4) आलोचना से आगे(आलोचना) – सुधीश पचौरी, प्रकाशक : राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, ISBN -81-7119-568-7, सं : 2000, पृ.सं. – 13.
5) वर्तमान साहित्य/ शताब्दी आलोचना पर एकाग्र – 2(पत्रिका), संपादक : अरविन्द त्रिपाठी, प्रकाशक : समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली, 2002, आधुनिकता का उद्भव – कैलाश वाजपेयी, पृ.सं. – 25.

डॉ मधुछन्दा चक्रवर्ती, अतिथि अध्यापक, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, अगरतला, Madhuchanda.chakrabarty@gmail.com , 9401824436